Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नयी कविता के हस्ताक्षर मुक्तिबोध का वैचारिक बोध

डॉ. राम सिंह सैन*

* सहायक आचार्य (हिंदी) राजकीय महाविद्यालय, चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर गजानन्द माधव मुक्तिबोध ने प्रयोगवाद के साथ-साथ नयी कविता पर अपनी लेखनी को गुंजायमान किया है जो हिंदी जगत में अपनी निराली पहचान बनाये हुए है। सन 1947 में तार सप्तक के प्रकाशन के अनन्तर प्रयोगवाद नाम बहुत प्रचलित था। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ने कविता को नये बदलाव को प्रतिष्ठित किया। प्रयोगवाद और उसके बाद नयी कविता का सन 1951 में उदय हुआ मुक्तिबोध ने अंतरराष्ट्रीय सामाजिक आर्थिक के काव्य और शिल्प के धरातल पर नयेपन की आधारशिला रखी। किन्तु उनकी वैचारिक शीलता ने वादमुक्त समाज का निर्माण किया। जिसकी चरम परिणति हम नकेनवाद में देखते है। इसी के बाद विकसित काव्य प्रवृति का उन्मेष हुआ। जिसे हम 'नयी कविता' के नाम से अभिहित करते है।

नयी कविता एक नितांत युग में जन्म लेने वाली सम्पूर्ण सांस्कृतिक प्रणाली का अंग थी। वह स्वतंत्र भारत के नये शासक वर्ग की आशाओं – आकांक्षाओं और उनकी विचारधाराओं का प्रतिबन्ध और प्रतिफल दोनों थी। इसी से मध्यवर्ग की अभिव्यक्ति हुई है। इसी अर्थ में नयी कविता एक बौधिक प्रतिक्रिया है। इसीलिए कविता से अधिक नयी कविता को बनाने वाले विचारों को महत्व दिया जाता है। नयी कविता पर कोई भी गंभीर चिंतन किसी कविता की मात्र व्याख्या से तय न होकर उसके रचनाकारों और आलोचक के विचारों से तय किया जाता है। इसी अर्थ में नयी कविता की प्रक्रिया मूलतरू विचारात्मक है भावात्मक नहीं।

नयी कविता का वैचारिक आधार मूलतरूबुर्जुआ प्रगतिशीलता है। जिसे प्रायरू अनदेखा किया गया है। ये क्रांति कारी काव्य नहीं है, किन्तु यह मध्यवर्ग की अपनी ऐतिहासिक भूमिका की पहचान का माध्यम है। इसके अनुभव की अभिव्यक्ति का ओजस्वी स्वरुप है। वह नयी कविता के व्यापक फलक पर विचरण करती रही है। प्रगतिशील कविता की नयी कविता से भिन्न कोई अपनी प्रणाली नही है। तार सप्तक के समय रचनाओं में बोध का वह स्वरुप था। जो मानव को नवीन संकल्पनाओं के साथ जीवन की गहरी समझ को विकसित किया था। परस्पर अलग दिखाई देने वाली सोच भी नयी ऊर्जा का संचार करती है। कविता परस्पर अलग होते हुए भी एकता के सूत्र में बंधी है।

नयी कविता का पहला निर्णायक बिंदु आजादी और विकास का रास्ता है। नयी कविता में आधुनिक युग का सत्य समाहित है। आज के जीवन में रुढियों और पुराने मूल्यों को नवीन ऊर्जा के साथ स्थापित किये है। नवीन संवेदनाओ ने जन्म लिया है। आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रयत्न ने उसमे नये प्रकार से सक्रियता ला दी। एक ओर व्यक्ति इनकी स्थापना में लगा है और दूसरी ओर बौद्धिक चेतना के कारण विश्लेषणात्मक है। इसे आप मनोवैज्ञानिक संक्रमण भी कह सकते है। ला।मी कान्त के विचारो के अनुसार 'आधुनिक युग की प्रेक्षणीयता बौद्धिक हो गई है। नयी कविता का सौंदर्य बोध यथार्थ और विवेक से प्रेरित है। नयी कविता में किसी शिशु के सामान जिज्ञासा का भाव न होकर एक चेतना संपन्न व्यक्ति की वैज्ञानिक दृष्टि हुआ करती है। नया कवि जीवन में सौन्दर्य की उपलब्धि करता है। क्रियाशीलता या गतिशीलता में वह सौन्दर्य का अनुसन्धान करता है। नयी कविता में रस और रंग भी है किन्तु उसके प्रति रोमानी दृष्टिकोण के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिखाई देता है। यहाँ सौन्दर्य और यथार्थ दोनों एक दूसरे के पूरक होते है'।[1]

नयी कविता में तमाम घटनाओ के बीच व्यक्तिगत जीवन के अभावो की जमीन पर जिस अशांति, घुटन, कुंठा, कशमकश, निरुपयायता आदि का अनुभव लेकर मुक्तिबोध ने अपनी कविताओ में चेतना का संचार किया। मुक्तिबोध ने लिखा है कि 'बहुत शीघ्र ही 1942 के प्रथम चरण में मुक्तिबोध एक ऐसी प्रतिरोधी विचारधारा के सम्मुख आये जिसके विरोध से उन्होंने बहुत कुछ सीखा इसी प्रेरणा के साथ विवेक और शांति को मैंने एक ऐसी जगह से पाया जिसे पहले मैं विरोधी शक्ति मानता था'।[2] स्पष्ट है की यह विरोधी शक्ति मार्क्सवाद ही थी। यही अपने नए विकास पथ की तलास हुई। मुक्तिबोध की विचार यात्रा कालमार्क्स का आधार लेकर चलती है। इसलिए मार्क्स के सिद्धांत क्या है यह देखना अनिवार्य है कार्लमार्क्स के मूल सिद्धांत दो है। एक ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत और दूसरा अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत। इन दोनों सिद्धांतों के अनुसंधानों का श्रेय कालमार्क्स को जाता है मार्क्स और एंगेल्स द्वारा प्रतिपादित समाजवादी दर्शन को भौतिकवाद कहते है। अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत वर्तमान पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था की गतिविधि का रहस्य मय उद्घाटन करता है। इसी विचारधारा का प्रभाव मुक्तिबोध पर पड़ा।

मुक्तिबोध ने सन 1935 में लेखन कार्य आरम्भ किया था। उनकी प्रारंभिक रचनाएँ माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'कर्मवीर' में प्रकाशित हुई थी। सन 1938 से उन्होंने मानसिक संघर्ष भी सहन किया। कहा जाता है कि सन 1942 में वे छायावादी संस्कार से दूर होकर मार्क्सवाद के विचार के निकट आकर उन्होंने भौतिकवादी मूल्यों को अपनी कविता में स्थान दिया। मुक्तिबोध के विचार चिंतन का केंद्र था। सौंदर्यबोध, वर्ग बोध तथा मानव का सुख-दु:ख और अन्ततः मार्क्सवाद का ग्रहण। बर्गसॉ की जीवनी

शक्ति के प्रति, वे आस्थावान थे। 1942 तक के वर्षों में मुक्तिबोध की बौद्धिक चेतना विकसित होती रही। सन 1943 में तार सप्तक का प्रकाशन हुआ और अन्य छ: कवियों के साथ मुक्तिबोध की सोलह कविताएँ अपना स्थान ले सकी। इसके अतिरिक्त काव्य जैसे 'चाँद का मुंह टेढ़ा, आलोचना–कामायनी: एक पुनर्मूल्यांकन, एक साहित्यिक की डायरी, नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध, नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र आदि। कथा साहित्य, विपात्र (उपन्यास) काठ का सपना, सतह से उठता आदमी, आदि इनके सम्पूर्ण साहित्य में ईमानदारी से भरी संवेदना प्राप्त होती है। परिवेश से विमुक्तता साहित्य को अपनी मूल चेतना से काट देती है। साहित्य मूलत: मानवीय मूल्यों का वाहक होता है। मानवीय मूल्यों के लिए उपनिवेशवादी सामंती पूँजीवादी प्रवृतियों के खिलाफ लड़ाई और दलित शोषितों का हार्दिक समर्थन हर रचनाकार का कवि कर्म बन जाता है। उसकी अभिव्यक्ति नितांत निजी न होकर युगीन संदर्भों की उपज होती है। जिसके केंद्र में मनुष्य की सम्पूर्ण स्थिति और यथार्थ जटिलताओं का विश्लेषण होता है। यही विचार जगत का आन्तरिक करण मुक्तिबोथ को समकालीनता का पूरा एहसास लिए हुए चुनौतियों के प्रति सजग करते है। उनकी रचनाओं की दीर्घकालिक मत का राज यह है कि उनका समूचा अस्तित्व और कवि व्यक्तित्व मनुष्य को केंद्रीय चिंतन मानकर परिस्थितियों की गहरी पहचान होकर कविता और भाषा को ठोस आधार दिया है। मुतिबोध उस स्थिति से गुजर चुके है जहाँ कोई विचार पद्धति या मतवाद महत्वपूर्ण नही रह जाता। वहां मुक्तिबोध की कविता और विचारों की महत्ता को बल मिलता है। जीवन बोध, मानवमूल्यों और भावी संभावनाओं को चित्रित किया है। यह सत्य है कि उन्होंने आदमी की पीड़ाओं को अभिचित्रित और शब्दबद्ध किया है। समसामयिकता से आगे बढ़कर मार्क्सवादी धरातल पर से आगे अपने कदम बढ़ाये है और मानवीयता का गहन विश्लेषण और अन्वेषण करते हुए उन्होंने मार्क्सवादी सूत्रों का प्रयोग कर उसका अतिक्रमण किया है। उन्हें छायावादी भाषा शैली मिली है जिसे उन्होंने विचारो में ढालकर प्रगतिशीलता से विमुक्त होकर नवीनता को नया आयाम दिया है। लेकिन मार्क्सवादी विचारधाराओं को सहारा बना कर शोषितों के रक्षक बन कर मानवीयता की रक्षा की है। राजनीति को समझे बिना युगबोध को समझा नहीं जा सकता। मुक्तिबोध इस कसौटी पर अपने आप में निराले है।

मुक्तिबोध की सृजन शीलता का वैचारिक बोध हमेशा मार्क्सवाद का आधार मानवीय बोध के लिए किया है। वे मानवता के पुजारी रहे है यहीं उनकी सौन्दर्यशील तत्वों के रूप में उभरा है। मुक्तिबोध का सौंदर्य शास्त्रीय, सामाजिक चेतना, भौतिकवादी और भावना के सौन्दर्य ने उनकी विचार शीलता को गति प्रदान की है। जो जीवन में सौंदर्य की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए साहित्य के उद्देश्य को मानव जीवन के उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया है। मार्क्सवादियो का अस्तित्व मानव के विकास में है। इसके बिना उनका कोई अस्तित्व नही है उनकी धारणा है कि 'जिस मनुष्य के बाहर मनुष्य की सत्ता नहीं है। वैसे सुन्दर वस्तुओं से बाहर (सुन्दर भाव विचारों से) सौंदर्य की सत्ता नही है साहित्य मनुष्य के लिए है। साहित्य का सौन्दर्य मनुष्य के उपयोग के लिए है मनुष्य साहित्य के लिए नही'।[3] मुक्तिबोध के विचारों में मार्क्सवादी दृष्टिकोण से सौंदर्य की उपयोगिता को अस्वीकार नही किया जा सकता। सौन्दर्य की सीमा केवल इंद्रिय बोध तक नही है। सुन्दर भाव, विचार, सुन्दर कर्मशीलता के लिए प्रेरणा स्रोत है। मुक्तिबोध ने सौन्दर्यबोध भव्यता में नहीं, उच्चता में नही, उदात्तता में नही बल्कि विराट बंजर वीरान में सौन्दर्य को देखा है। मुक्तिबोध नये सर्वहारा का सौन्दर्य बोध लेकर आये है। मुक्तिबोध में ग्लेमरस सौन्दर्य कही भी दिखाई देता है। श्रमशील मानव का दर्द, अदम्य जिजीविषा और आस्था का केंद्र बन जाता है। मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में श्रम शील नारी की पीड़ा को व्यक्त किया है 'यदि उस श्रम शील नारी की आत्मा सब अभावों को सहकर कष्टों को लात मार कर, निराशाएं ठुकराकर, किसी ध्रुव लक्ष्य पर खिचती सी जाती है, जीवित रह सकता हूँ में भी तो वैसे ही।'[4]

कवि ने जीवन के सत्य को व्यक्त किया है कि संघर्ष, वेदना और पीड़ाओं में मानव का जीवन मालुम होता है। अधिक सौंदर्य भी व्यक्ति को विद्रोही बना देता है। मुक्तिबोध प्रगतिशील मानस में समाजवादी चेहरा थे। द्वन्दात्मक भौतिकवाद सामाजिक ऐतिहासिक भौतिकवादको जन्म देता है। यह पद्धति इतिहास की और ले जाती है। मार्क्सवादी चिंतन हमे संघर्ष की ओर ले जाता है। यही चिंतन मुक्तिबोध में नवीन बोध का उदय करता है। बड़े–बड़े परिवर्तन और उथल पुथल की तह में मानव का पीड़ा बोध के साथ संघर्ष रहता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि समाजवाद के द्वारा जिस चीज की सम्भावना उत्पन्न होती है वह व्यक्ति का दमन नही, व्यक्ति की उपेक्षा नही, ना ही व्यक्ति की अधीनता बल्कि व्यक्ति और समाज का सामंजस्य है। मुक्तिबोध इसी समाजवादी व्यवस्था के समर्थक है। मुक्तिबोध की विचार शैली प्रगतिवादी थी। वे मनुष्य के विकास में जीवन्त आस्था को लेकरचलते थे।मुक्तिबोध प्रगतिशील रचनाकारों की कमियों और सीमाओं को उजागर करते थे।उनका सम्पूर्ण साहित्य प्रगतिशील जीवन मूल्यांकन का मापदंड बन गया। मुक्तिबोध जीवन भर संघर्ष करते रहे। उनका संघर्ष समाज, इतिहास, जीवन से और अपने आपसे है। उनके इन तमाम भीतरी बाहरी संघर्षो को उनकी रचनाओ और कविता में देखा जा सकता है उनकी कविताओं में लेश मात्र दिखावा नही झलकता बल्कि उनमे मानव के संघर्ष की गाथा का ताना बाना बुना मिलता है।

मुक्तिबोध की विचारधारा से जन्मी उनकी रचनाएँ आत्मा की पुकार और जीवन का संघर्ष मालुम पड़ती है। उनका संघर्ष आत्मा को ताकत देकर जाता है, क्योकि उनमे पलायन का स्वर नहीं दिखाई देता है और ना ही दिशाहीनता का बोध। उनकी कविता में दहशत, आतंक, और अँधेरे के रूप में पीड़ित व्यक्ति की जीवन गाथा का स्वरुप मिलता है और न भाग्य का रोना धोना नही मिलता। प्रेमिका के वियोग का रसीला दर्द भी नही बल्कि मानवीयता के आधार पर वैश्विक दृष्टि देने वाली पीड़ा का बोध है। यही बोध मानव को नवीन संसार की और ले जाता है। मानव की पीड़ा ही वे अपनी पीड़ा मानते थे।

जिन्दगी भर रोते रहे पराये दु:ख पर
अपने दु:ख ने उन्हें कभी रोने न दिया।
खिलता रहा यह कमल चिंगारियों के बीच
कीचड़ और जलाशय में कभी खिलने न दिया।[5]

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. मुक्तिबोध का गा। साहित्य –दूधनाथ सिंह
2. वही
3. वही
4. मुक्तिबोध की काव्य –चेतना और मूल्य संकल्प – राजपाल हुकमचंद
5. वही